(१) घर-घर आनन्द छायो.....

घर-घर आनन्द छायो मुनिवर ने केवल पायो ॥ टेक ॥

शुक्लध्यान का दूजा पाया, प्रभु ने आतमध्यान लगाया;
पहले चारित्रमोह विनाशा, चारित्र रत्न को पाया।
चहुँगति दुःख नशायो नशायो ॥ 1 ॥

मात्र एक अन्तर्मुहूर्त में, ज्ञान-दर्शनावरण नशाया;
ततक्षण ही निज आत्मवीर्य से, अन्तराय घातिया नशाया।
अनन्त चतुष्टय पायो जी पायो ॥ 2 ॥

शुक्लध्यान का तीजा पाया, सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाति सुहाया;
प्रभु ने अद्‌भुत ध्यान लगाया काय योग अतिसूक्ष्म रहाया।
आतम रस बरसायो-बरसायो ॥ 3 ॥

शुक्लध्यान का चौथा पाया, व्युपरतिक्रियानिवृत्ति सुहाया;
प्रभु ने योग निरोध कराया मन-वचन-काय सम्बन्ध नशाया।
शाश्वत सिद्ध पद पायो जी पायो ॥ 4 ॥

पुण्य उदय है आज हमारे नेमीश्वर गिरनार पधारे;
आत्मसाधना पूरी करके प्रभु शाश्वत शिवधाम पधारे।
सुरपति ने उत्सव मनायो मनायो ॥ 5 ॥